दिनांकः 11-12-2020

सेवा में,

अध्यक्ष महोदय,

परीक्षा समिति, योग प्रमापीकरण मंडल

मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान,

नई दिल्ली।

मान्यवर,

सविनय निवेदन यह है कि मैं डॉ. अशोक यादव, मुख्य परीक्षक, योग प्रमाणीकरण मंडल, इस पत्र के माध्यम से आपके संस्थान में दिनांक 28.11.2020 को ऑनलाइन माध्यम से संपन्न हुई योग प्रमापीकरण मंडल की विभिन्न स्तरों की प्रायोगिक परीक्षा की ओर आपका ध्यान इंगित करना चाहता हूं। इस परीक्षा में डॉ. अशोक यादव, मुख्य परीक्षक, सुश्री शिवानी खत्री, बाह्य परीक्षक तथा श्रीमान दलीप कुमार आंतरिक परीक्षक के रूप में नियुक्त हुए थे। इस परीक्षा में लेबल 1 में 4 परीक्षार्थियों, लेबल 2 में 13 परीक्षार्थियों तथा लेबल 3 में 9 परीक्षार्थियों ने भाग लिया।

प्रायोगिक परीक्षा में सभी स्तरों में कुछ परीक्षार्थियों का प्रायोगिक प्रर्दशन, विषय की जानकारी तथा अध्ययन कौशल योग प्रमाणीकरण मंडल के मूल्यांकन, पाठयक्रम एवं मानको के अनुसार निम्न स्तर का रहा। दोनों की परीक्षकों की मूल्यांकन तालिका को देखकर स्पष्ट हो रहा था कि इन निम्न स्तर के प्रर्दशन वाले परीक्षार्थियों को अंक उसी तरह बांटे जा रहे थे, जिस तरह किसी व्यावसायिक संस्था द्वारा अपने ग्राहकों को लुभाने के लिए उत्पादन को बेचा जाता है। जब उनसे मूल्यांकन तालिका के अंकों को लेकर चर्चा हुई तो निम्न बिन्दुओं को पायाः-

1. तो कहा गया महोदय ये राष्ट्रीय योग संस्थान है। इसमें कई डिप्लोमा होल्डर और टॉपर हैं। जैसे वो कह रहें हो कि शत प्रतिशत परिणाम से कम तो बनता ही नहीं है।
2. एक परीक्षक कहते हैं इस परीक्षार्थी को तो मैंने पढ़ाया है, ये तो किसी भी कीमत पर अनुतीर्ण हो ही नहीं सकता, दूसरे परीक्षक कहते है कि इसे तो मैंने प्रशिक्षित किया है, ये तो जीवन में किसी भी परीक्षा में अनुतीर्ण हो ही नहीं सकता।
3. एक परीक्षार्थी की तो विचित्र की दास्ता सुनने को मिली, पता चला ये महोदय पूर्व में योग प्रमाणीकरण मंडल की परीक्षा मे अनुतीर्ण हुए थे, उन्होंने निर्णय पर सवाल उठाए और अपनी शिकायत उच्च स्तर पर दर्ज कराई। परीक्षको द्वारा कहा गया अगर इस बार इन महाशय के परिणाम में कछ ऊँच-नीच हूई तो..... इसलिए इन्हें तो उत्तीर्ण... ये किस तरह का भय और दबाव है परीक्षकों में... समझ से परे है।

4. ये परीक्षार्थी तो सैद्धांतिक परीक्षा में सबसे उच्च अंक लाया है, ये तो प्रायोगिक परीक्षा में अनुतीर्ण हो ही नहीं सकता।
5. कहा जा रहा है कि आपका दायित्व सिर्फ इनता है कि दोनों परीक्षकों के अंकों का सिर्फ अंतर देखिए, बाकी जो परिणाम परीक्षकों ने दे दिया, अंतिम करके भेज दीजिए।

इस प्रायोगिक परीक्षा में विभिन्न स्तरों (मूख्य रूप से लेबल 3) में 6-9 परीक्षार्थी का संपूर्ण प्रर्दशन निम्न स्तर का रहा, मगर ग्रेस तो छोडिए, उन्हें अच्छे नंबरों से उतीर्ण किया गया। मेरे पास पहले जो मूल्यांकन तालिका आई, उसमें कई त्रिटियां थीं, दोनों परीक्षकों से विचार-विमर्श के बाद उनमें सुधार किया गया। परीणामतः कुछ परीक्षार्थी परीक्षा उतीर्ण करने की स्थिति में नहीं थे। फिर बाद में, मैं नहीं जानता किस दबाव में पहले वाली मूल्यांकन तालिका जिसमें शत-प्रतिशत परीणाम इंगित था को अंतिम मानकार परिणाम को घोषित किया गया।

योग प्रमाणीकरण मंडल के मुख्य परीक्षक के रूप में निष्पक्ष और नियमबद्ध परीक्षा कराना मेरा प्रथम दायित्व है। उसी दायित्व का निर्वहन करते हूए में इस परीक्षा में मूल्यांकन तालिका में दोनों परीक्षको द्वारा हुई अनियमितताओं की ओर आपका ध्यान केन्द्रित कराना चाहता हूं।

कृपया विषय की गंभीरता को समझते हुए उचित निर्णय लें।

इस पत्र की एक प्रति मैं माननीय मुख्य कार्यकारी अधिकारी, योग प्रमाणीकरण मंडल डॉ. ईश्वर वी. बसवरड्डि जी को भेज रहा हूं। माननीय मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय से मेरा अनुरोध है कि कृपया इस विषय की गंभीरता व प्राथमिकता को समझते हुए मेरा मार्गदर्शन करें।

मैं अपनी बात को हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी के इस वक्तव्य के साथ विराम देना चाहूंगा, उन्होंने एक बार कहा था 'योग भारत की अनमोल धरोहर है, हम सबका ये दायित्व है कि हम कम से कम कुछ लोग तो इसकी शुद्ध परंपरा को कायम रखें, इसे भ्रष्टाचार (भ्रष्ट+आचरण) से दूर रखें। तभी आने वाले पीड़ियों के लिए योग को संरक्षित कर उन्हें लाभांवित कर सकें।' उन्होंने सही कहा, वे दूरदर्शी हैं, उन्हें पता है समाज में योग को दीमक लगाने वाले कई हैं... जो इस पावन विद्या को चट (समाप्त) करना चाहते हैं।

धन्यवाद सहित

प्रार्थी

डॉ. अशोक यादव

मुख्य परीक्षक, योग प्रमाणीकरण मंडल